कमला भसीन

कमला भसीन (24 अप्रैल 1946-25 सितंबर 2021) भारत के महिला आंदोलन की एक प्रतीक थीं। उनकी भावना, बुलंद आवाज़, नारे, कविता, गीत, लेख और भाषण आम लोगों के साथ-साथ शिक्षाविदों को भी पसंद आये और उन्हें नारीवादी आंदोलन में एक नेता के रूप में खड़ा किया।

कमला ने अप्रैल 1998 में दक्षिण एशियाई महिला नेटवर्क संगत की सह-स्थापना की। वे भारत में महिला अधिकार एनजीओ जागोरी की सह-संस्थापक भी थीं। उन्होंने किताबें, पुस्तिकाएं, गीत और कहानियाँ लिखीं और प्रकाशित कीं, जिनमें से कई को लगभग 30 भाषाओं में पुन: प्रस्तुत किया गया है। वे वैश्विक आंदोलन *वन बिलियन राइजिंग* का

एक महत्वपूर्ण हिस्सा थीं और 2005 में "नोबेल शांति पुरस्कार के लिये 1000 महिलाएं" पहल के समन्वयकों में से एक थीं।

व्यक्तिगत त्रासदी और हानि ने उन्हें आध्यात्मिकता में जीवन का गहरा अर्थ खोजने के लिये प्रेरित किया। वे थिच नहत हान और बौद्ध दर्शन की अनुयायी बन गईं, हालाँकि वे सभी धार्मिक शिक्षाओं के प्रति ग्रहणशील रहीं।

कमला भसीन पुरस्कार

दक्षिण एशिया में जेंडर समानता के लिए

यह पुरस्कार हर वर्ष दक्षिण एशिया के दो व्यक्तियों को सम्मानित करता है:

- दक्षिण एशिया में उन महिलाओं को सम्मानित करने के लिये एक पुरस्कार जो गैर-पारंपरिक तरीकों से जीविकोपार्जन करती हैं
- जेंडर समानता की दिशा में काम करने वाले पुरुषों को सम्मानित करने के लिये पुरस्कार

पुरस्कार की दोनों श्रेणियों में सिस और ट्रांस पुरुष और महिलाएं शामिल हैं।

पुरस्कार में शामिल हैं:
एक ट्रॉफी के साथ एक लाख रुपये की पुरस्कार राशि।

यह पुरस्कार विजेताओं के लिये साथ मिलकर सीखने और दक्षिण एशिया में बदलाव के लिए काम कर रहे व्यक्तियों, संगठनो और डोनर्स के साथ जुड़ने और नेटवर्क बनाने का एक शानदार अवसर है।

कौन आवेदन कर सकते हैं?

हम अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका के दक्षिण एशियाई नागरिकों से प्रविष्टियाँ आमंत्रित करते हैं जो दक्षिण एशिया के किसी भी देश में रह रहे हैं और काम कर रहे हैं।

आवेदन आठ देशों की सभी आधिकारिक भाषाओं में स्वीकार किये जाएंगे।

पुरस्कार की श्रेणियाँ

1. गैर-पारंपरिक आजीविका (NTL - एनटीएल) की (सिस (जन्म से) /ट्रांस) महिला प्रैक्टिश्नर।
2. (सिस (जन्म से)/ट्रांस) पुरुष जिसने लड़कों/पुरुषों के साथ काम करके जेंडर-न्यायपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र (इको सिस्टम) को सक्षम करने की दिशा में काम

किया है।

चयन के मानदंड

पहली श्रेणी

- पिछले 3 वर्षों से अपने संदर्भ में गैर-पारंपरिक आजीविका का तरीका अपना रही हैं
- न केवल अपनी कमाई, बल्कि अपने जीवन पर भी नियंत्रण पाने के लिये खुद को सशक्त बनाया है।
- एक परिवर्तन एजेंट हैं और दूसरों के लिये अवसर पैदा करती हैं।

गैर-पारंपरिक आजीविका के तरीके वे हैं जो महिलाओं के इर्द-गिर्द उनकी उन्नति को रोकने के लिये स्थापित की गई बाधाओं और दीवारों को तोड़ देते हैं जो उनकी एक निश्चित जाति, समुदाय या धार्मिक समूह से होने के कारण होती हैं, या उनके यौन रुझान, जेंडर पहचान, विकलांगता के कारण होती हैं, या वे कहाँ रहती हैं इस कारण होती हैं। प्रत्येक समाज में भेदभाव प्रणालियों के आधार पर इन कारणों की सूची लंबी और भिन्न हो सकती है। उदाहरण के लिये, अवैतनिक काम और गतिशीलता से संबंधित जेंडर मानदंड एक कारण जिसकी वजह से महिलाओं को ड्राइविंग या राजमिस्त्री जैसे व्यवसायों को करने की अनुमति नहीं मिलती है कि क्यूंकी इसके लिये उन्हें दिन-रात घर से दूर रहने की आवश्यकता होती है। आप यहाँ क्लिक करके गैर-पारंपरिक आजीविकाओं और क्षेत्र के आसपास कुछ उदाहरणों के बारे में अधिक पढ़ सकते हैं।

दूसरी श्रेणी

- पिछले 5 वर्षों में जेंडर-न्यायपूर्ण दुनिया की दिशा में पुरुषों / लड़कों के साथ काम कर रहे हैं।
- देखभाल कार्य में योगदान देकर, महिलाओं के नेतृत्व को स्वीकार करके, जेंडर आधारित हिंसा के सभी रूपों और जेंडर आधारित सामाजिक-सांस्कृतिक मानदंडों का मुकाबला करके व्यक्तिगत और कामकाजी जीवन में हानिकारक पुरुषत्व का मुकाबला कर रहे हैं।
- एक परिवर्तन एजेंट हैं और उन्होंने जेंडर आधारित दुनिया को सक्षम बनाने के लिये अन्य पुरुषों को प्रभावित किया है।

जेंडर समानता को बढ़ावा देने में लड़कों और पुरुषों को शामिल करने की आंदोलन बढ़ रहा है। कमला का नारा, "उच्च गुणवत्ता वाले पुरुष समानता से नहीं डरते हैं", पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देने वाले पुरुषों के महत्व पर प्रकाश डालता है। इस श्रेणी का उद्देश्य ऐसे पुरुषों को सम्मानित करना है जिन्होंने अपने जीवन में देखा है कि पितृसत्ता ने उनके जीवन को कैसे प्रभावित किया है और, अपने विशेषाधिकारों को स्वीकार किया है और पितृसत्ता की बाधाओं को पहचाना है। हम ऐसे पुरुषों की तलाश करते हैं जो हानिकारक प्रथाओं का सामना करने, महिलाओं और यौन अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा का विरोध करने, घरेलू देखभाल कार्य की ज़िम्मेदारी साझा करने और महिलाओं और ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को उनके अधिकारों का दावा करने में समर्थन करने के लिये अन्य पुरुषों के साथ सक्रिय रूप से काम करते हैं। हमारा लक्ष्य इन परिवर्तन एजेंटों के लिये एक-दूसरे से सीखने और जेंडर समानता की पैरवी करने के लिये दूसरों को प्रेरित करने के लिये सहायक वातावरण तैयार करना है।

समयावधि

8 मार्च, 2026- आवेदन प्रक्रिया शुरू
7 जून, 2026- आवेदन प्रक्रिया समाप्त
जुलाई-सितंबर 2026- उम्मीदवारों की सूची तैयार करना और साक्षात्कार
अक्टूबर 2026- विजेताओं की घोषणा
30 नवंबर, 2026- तेवा, ललितपुर, नेपाल में पुरस्कार समारोह

जूरी के सदस्य

बांग्लादेश

ख़ुशी कबीर एक सामाजिक कार्यकर्ता, नारीवादी और पर्यावरणविद् हैं। वर्तमान में वे निजेरा कोरी की समन्वयक हैं। वे विभिन्न राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक मंचों जैसे सदस्य, *सेंटर फॉर पॉलिसी डायलॉग* की बोर्ड ट्रस्टी; संगत के लिये क्षेत्रीय सलाहकार; और *वन बिलियन राइजिंग* वैश्विक अभियान के लिये बांग्लादेश समन्वयक में मानद क्षमता में भी शामिल हैं।

नेपाल

बिंदा पांडे एक नेपाली राजनीतिक कार्यकर्ता हैं। वेह पहली नेपाली संविधान सभा (2008-2012) की सदस्य थीं और वर्तमान में नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी का प्रतिनिधित्व करते हुए संघीय संसद की सदस्य हैं। वे 2004-09 के दौरान जनरल फेडरेशन ऑफ नेपाली ट्रेड यूनियंस की उप महासचिव थीं। उन्होंने एक दशक (2011-2021) तक आईएलओ (ILO) गवर्निंग बॉडी में एशिया प्रशांत ट्रेड यूनियन का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने "नेपाली ट्रेड यूनियन आंदोलन में महिला भागीदारी" और "नेपाली राजनीति में महिलाएं" पर किताबें लिखी हैं।

भारत

अनु आगा प्रशिक्षण से एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं। थर्मैक्स बोर्ड ने अनु को कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया। सेवानिवृत्त होने के बाद, उन्होंने अपना समय आर्थिक रूप से वंचितों के लिये प्राथमिक शिक्षा के लिये समर्पित किया। वे 2 दशकों से अधिक समय से आकांशा के बोर्ड में हैं और उन्होंने *टीच फॉर इंडिया* (TFI) को आरंभ करने में मदद की। वह TFI की अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हुईं और अभी भी उनके बोर्ड में हैं। अनु भारतीय उद्योग परिसंघ (CII) में सक्रिय रही हैं। उन्होंने 6 वर्षों तक राज्यसभा के सदस्य के रूप में कार्य किया है।

नमिता भंडारे एक पुरस्कार विजेता पत्रकार हैं, जिनके पास संडे, इंडिया टुडे और दैनिक हिंदुस्तान टाइम्स सहित विभिन्न प्रकाशनों के लिये 30 वर्षों का रिपोर्टिंग अनुभव है। 2013 में, उन्हें मिंट अखबार के लिये भारत का पहला जेंडर संपादक नियुक्त किया गया था और वे 2016 तक वहाँ रहीं। उन्होंने महिलाएं और कार्य पर लेखों की एक श्रृंखला लिखी है।

पाकिस्तान

मुनीज़े जहांगीर, Voicepk.net की मुख्य संपादक हैं, जो मानव अधिकार मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने वाला पाकिस्तान का पहला डिजिटल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म है। वे एक पुरस्कार विजेता टीवी पत्रकार और वृत्तचित्र फिल्म निर्माता हैं, जो वर्तमान में आज टीवी पर 'स्पॉटलाइट' नामक प्राइम-टाइम करंट अफेयर्स शो की एंकरिंग करती हैं। वे पाकिस्तान के मानव अधिकार आयोग की निर्वाचित परिषद सदस्य हैं; SAHR (*साउथ एशियन फॉर ह्यूमन राइट्स*) की एक निर्वाचित बोर्ड सदस्य और SAWM (*साउथ एशियन वुमेन इन मीडिया*) की संस्थापक हैं। 2008 में उन्हें WEF द्वारा *यंग ग्लोबल लीडर* के रूप में सम्मानित किया गया था।

श्रीलंका

राधिका कुमारस्वामी एक प्रसिद्ध वकील, राजनयिक और मानव अधिकार वकील हैं, जिन्होंने 2006 से 2012 में अपनी सेवानिवृत्ति तक संयुक्त राष्ट्र के अवर महासचिव (*अंडर सेक्रेटरी जनरल*) और बच्चों और सशस्त्र संघर्ष पर महासचिव के विशेष प्रतिनिधि के रूप में कार्य किया। 1994 से 2003 तक, वे महिलाओं के खिलाफ हिंसा पर संयुक्त राष्ट्र की विशेष प्रतिवेदक (स्पेशल रैपोर्टीयर) थीं। 2017 में, उन्हें म्यांमार पर संयुक्त राष्ट्र तथ्य जांच (*फैक्ट फाइंडिंग*) मिशन के लिये नियुक्त किया गया था और मध्यस्थता पर महासचिव के सलाहकार बोर्ड के सदस्य के रूप में भी नियुक्त किया गया था। जून 2022 में, उन्हें इथियोपिया पर मानव अधिकार विशेषज्ञों के अंतर्राष्ट्रीय आयोग के सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया था।

पुरस्कार के प्रायोजक संगठन

Azad Foundation

आज़ाद फाउंडेशन एक नारीवादी संगठन है जो सामाजिक और धार्मिक विभाजनों के पार काम करता है, जो कम-संसाधनों वाली महिलाओं को व्यवहार्य गैर-पारंपरिक आजीविका विकल्पों में जुड़कर खुद को सशक्त बनाने में सक्षम बनाता है।

आज़ाद फाउंडेशन के काम के बारे में और अधिक पढ़ने के लिये कृपया यहाँ जाएं - www.azadfoundation.com

nfi
National Foundation for India

नेशनल फाउंडेशन फॉर इंडिया

नेशनल फाउंडेशन फॉर इंडिया (NFI) एक संगठन है जो नागरिक सहभागिता, उत्तरदायी नीति-निर्माण और सामाजिक जवाबदेही के माध्यम से सामाजिक न्याय को सक्षम करने के लिये प्रतिबद्ध है। सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने की दिशा में, NFI पिछले तीन दशकों से 14 राज्यों में 500 से अधिक ज़मीनी स्तर के नागरिक समाज संगठनों के साथ काम कर रहा है। वर्तमान में NFI जलवायु परिवर्तन, जेंडर न्याय, नागरिक स्थान और संवैधानिक मूल्यों को बढ़ावा देने के अपने कार्यक्रम क्षेत्रों में दलित, आदिवासी और अल्पसंख्यक समुदायों के साथ काम करता है।

नेशनल फाउंडेशन फॉर इंडिया के काम के बारे में अधिक पढ़ने के लिये कृपया https://www.nfi.org.in/ पर जाएं।